सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 170

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 37
दिसम्बर – 2018

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधु भगिनियों से,

पिछले अंक से आगे–

"जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है", इस विषय पर शास्त्रीय दृष्टिकोण से एक गुरुबंधु द्वारा अभिव्यक्तिकरण –

वं. दादाजी एवं प.पू. बाबा के आशीर्वाद से वं. दादाजी के साथ जो बाते हुई है उसके अनुसार मैं आपको 'ॐकार साधना' के बारे में बताऊँगा। 'ॐकार साधना' यह विषय हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण ध्यान में रखकर भी समझ सकते है।

जिस ब्रह्मांड में हम रहते है उसकी रचना के बारे में हमारे वैज्ञानिकों ने खोज की है। इस विषय पर विज्ञान के क्षेत्र में अनेक आविष्कार हुए है। उन आविष्कारों के बारे में मुझे जो कुछ जानकारी है उसके अनुसार मैं अपने विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हम लोग जिस पृथ्वी पर रहते है वह सौर मंडल (Solar System) का एक हिस्सा है। आप सभी यह जानते है कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके चारों ओर भ्रमण करती है। सूर्य के प्रभाव से ही पृथ्वी पर सारा जीवन संभव हो सका है। दिन–रात, पेड़–पौधे, मौसम तथा हमारा अस्तित्व ये सब सूर्य से सीधा संबंध रखते है। सौर मंडल में पृथ्वी के अलावा अन्य कई ग्रह है और वे ग्रह भी सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते है। ब्रह्मांड के अंतर्गत अनेक सूरज है, सितारे है जिन्हें सम्मिलित रूप से 'आकाशगंगा' (galaxy) कहा जाता है। सूर्य और पृथ्वी इनके बीच की दूरी ही

इतनी अधिक है कि पृथ्वी से अन्य तारों एवं ग्रहों के अंतर की कल्पना करना भी मुश्किल है।

इन सब बातों का हमारे साथ क्या सबंध है?इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है – प.पू. बाबा ने बताया है कि मानवीय देह यह ईश्वर की विचित्र और अनोखी कारीगरी है। वैज्ञानिकों के अनुसार ब्रह्मांड में अनेक आकाशगंगाऐं है जो अलग–अलग गतियों से घूमती है। हम जिस आकाश गंगा और सौर मंडल में हम रहते है वह कितनी अजीब और अद्‌भूत है यह हमने जानना आवश्यक है। इसीसे हमें अपने मूल्य का आकलन होगा। ये जो बातें मैं बता रहा हूँ वे सब शास्त्रीय तथ्य है। पृथ्वी पर जिस तरह मानवीय जीवन है जिसमें 19 तत्वों का संमिश्रण तथा तालमेल हुआ है वह हमारे सौर मंडल के अन्य किसी भी ग्रह पर नहीं है। पृथ्वी और सूर्य में दूरी, पृथ्वी की गति तथा यहाँ के अन्य सभी तत्वों का अद्‌भुत समन्वय होकर पृथ्वी पर अन्य जीवों का तथा मानव का निर्माण हुआ है। पृथ्वी पर जैसा जीवन है वैसा ब्रह्मांड में अन्य कहीं भी नहीं है, हमारे सौर मंडल में अन्य ग्रहों पर भी नहीं है, अन्य सूरज, सितारों में नहीं है, कहीं भी नही है। इतने विशाल ब्रह्मांड में मानव का निर्माण यह अत्यंत असाधारण ऐसा एकमेव चमत्कार है।

सूर्य का आकार पृथ्वी की तुलना में कई गुणा बड़ा है। हम पूरी पृथ्वी को देख नहीं सकते, पृथ्वी का केवल कुछ भाग हम देख सकते हैं लेकिन मानवीय देह की रचना भी कितनी बेजोड़ और अद्‌भूत है कि हमारी आँखें जो सौ–दो सौ गज से अधिक पृथ्वी का भाग नहीं देख सकती वे आकाश में हजारों किलोमीटर दूर तक का नज़ारा देख सकती है। सूर्य और पृथ्वी के संबंध में दूसरी बात यह है कि पृथ्वी खुद घूमती है और उसके साथ सूर्य के चारों ओर भ्रमण करती है। इसका (rotation & revolution) जो क्रम है उसकी वजह से पृथ्वी पर दिन–रात तथा मौसम होते है जिनके अनुसार हमारा दैनंदिन जीवन और रहन–सहन आदि बनते हैं।

ब्रह्मांड की रचना की कल्पना यूँ कीजिए कि मानो आकाश को इस कमरे में फैलाकर उसमें सभी आकाश गंगाओं को तैरती स्थिति में रखा गया है। इतनी विशालतम सृष्टि में मानव मात्र एक अणु (ऍटम) के समान है। वैज्ञानिकों ने जब पदार्थ (matter) की खोज की तब उन्होंने पाया कि पृथ्वी पर कुल 92 प्रकार के तत्व (element) है परन्तु उन सभी 92 तत्वों की मूल रचना समान है और इसी रचना को अणु की संरचना कहते हैं। (आज 2018 तक कुल 118 प्रकार के तत्वों की खोज हुई है।)

अणु में मुख्यतः दो भाग होते है।

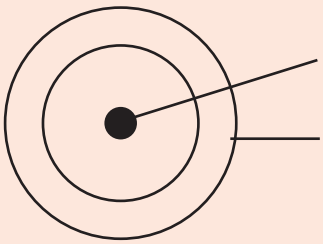

न्युक्लिअस– छोटा अणु, धुलीकण अथवा परमाणु

इलेक्ट्रॉन्स ये न्युक्लिअस के चारों ओर घूमते रहते है जैसे पृथ्वी और अन्य ग्रह सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते हैं।

सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म ऐसे अणु की रचना इस प्रकार है – इसमें मध्यभाग में न्युक्लिअस होता है

और न्युक्लिअस के चारों ओर इलेक्ट्रॉन्स् घूमते रहते है। इलेक्ट्रॉन्स् के भ्रमण के वलय वृत्ताकार (circular) या दीर्घवृत्तीय (elliptical) होते है। आपस में गुरुत्वाकर्षण की स्थिति के अनुसार इलेक्ट्रॉन्स् की परिक्रमाओं का पथ निश्चित होता है। यह ठीक उसी तरह है जैसे हमारी पृथ्वी तथा अन्य ग्रहों का परिक्रमा पथ सूरज के चारों ओर उनके गुरुत्वाकर्षण की स्थिति के अनुसार किसी का वृत्तीय तो किसी का दीर्घवृत्तीय है। यह सब ज्ञान हमें भौतिक विज्ञान से प्राप्त होता है।

वं. दादाजी द्वारा प.पू. बाबा से जो मानवशास्त्र का ज्ञान हमें प्राप्त हुआ है उससे यह पता चलता है कि मानवीय देह की रचना भी कुछ ऐसी अद्‌भुत है कि इसके अणुओं में ब्रह्मांड में विद्यमान सभी तत्व मौजूद है। पृथ्वी, आप, तेज, वायु और आकाश ये पंचमहाभूततत्व तथा उनके पंचतन्मात्र और पंचप्राणकोष, बुद्धि, मन, चित्त, अहंकार ये 19 तत्व मानवीय देह के अणुओं में समाहित (सम्मिलित)है। इन 19 तत्वों के अतिरिक्त अन्य कोई तत्व ब्रह्मांड में नहीं है, यह पहले सेमीनार में हमें बताया गया है।

विज्ञान के माध्यम से हमें ब्रह्मांड के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी मिलती है परन्तु इसके गहरे अध्ययन के बाद हमें पता चलता है कि ब्रह्मांड की विशालता हमारी कल्पना के परे है। हमने सौर मंडल की खोज की, मानव चंद्रमा पर पहुँच गया और चंद्रमा का निरीक्षण करने के बाद हमें यह पता चला कि चंद्रमा पर मानव की निर्मिती नहीं हुई है तथा वहाँ मानव रह नहीं सकते। सौर मंडल में सारे ग्रह इधर बहुत ही तेज गति से घूमते रहते है। कईयों की गति तो प्रकाश की गति के समान यानी 1,86,000 मील/सेकण्ड है।

वं. दादाजी द्वारा प.पू. बाबा ने हमें मानवीय देह की रचना के बारे में सुसंबद्ध ढंग से जो ज्ञान दिया है वह सभी ज्ञानों और विज्ञानों का सार (निचोड़) है। प.पू. बाबा ने हमें यह बताया है कि मानवीय देह पूरे ब्रह्मांड से बना है जिसका मतलब है "जो पिंड में है वही ब्रह्मांड में है।" अगर मानवीय देह की तुलना ब्रह्मांड से की जाए तो यह कह सकते है कि मानवीय देह न्युक्लिअस है और उसके चारों ओर देहिक, आत्मिक, कर्म और गुरुवलय है। मतलब अणु की बनावट के समान ही हमारी देह तथा उसके चारों ओर स्थित कर्मवलयों की संरचना है। येवलय (देहिक, आत्मिक, कर्म, गुरुवलय) तथा मानव को गतजन्मों से प्राप्त हुए ऋणानुबंधों के वलय मानवीय देह के चारों ओर भ्रमण करते रहते है जैसे अणु में इलेक्ट्रॉन्स् के वलय न्युक्लिअस के चारों ओर भ्रमण करते है। मानवीय देह के चारों ओर जो ऋणानुबंधों के वलय है उनका वर्गीकरण प.पू. बाबा ने इस प्रकार किया है – (1) जन्मकर्म (2) जन्मजन्मांतर (3) मातृपितृ (4) देवादिक (5) इतरेजन। ये सब वलय मानवीय देह के चारों ओर उसी तरह भ्रमण करते है जिस तरह अणु में इलेक्ट्रॉन्स् के वलय न्युक्लिअस के चारों ओर विभिन्न परिक्रमा पथों में भ्रमण करते है जैसे कि कुछ वृत्ताकार तो कुछ दीर्घवृत्ताकार। न्युक्लिअस के चारों ओर भ्रमण करने वाले इलेक्ट्रॉन्स् के वलयों के बारे में वैज्ञानिकों के परिक्षण से यह ज्ञात हुआ है कि इलेक्ट्रॉन्स् के परिक्रमा पथ को किसी शक्तिशाली माध्यम द्वारा बदल दिया गया तो ऊर्जा (engery) निर्माण होती है तथा किसी विधि से अगर इलेक्ट्रॉन्स् के वलयों को छोटा किया गया तो उनमें शक्ति पैदा होती है। अणु के स्वाभाविक गुण

एवं तत्व 92 प्रकार के होते है। प्रत्येक तत्व में इलेक्ट्रॉन्स् की संख्या तथा उनके अंदर के न्युक्लिअस की रचना भिन्न होती है जिसके कारण अणु के तत्वों की 92 प्रकार की श्रेणियाँ बनाई गई है। मान लीजिए किसी एक प्रकार के तत्व को दूसरे प्रकार के तत्व में बदलना है तो उस तत्व के इलेक्ट्रॉन्स् के वलयों की संख्या किसी प्रभावी शक्ति से कम या अधिक कर देने से उस तत्व के गुण बदल जाते है। इस खोज के प्रतिपादित सिद्धांत का उपयोग कई चीजों में किया गया है। इसी सिद्धांत के अनुसार यदि अणु के मध्यभाग में स्थित न्युक्लिअस के गुणधर्म को बदल दिया गया तो उसके कारण उसमें निर्माण होने वाली ऊर्जा से एटम बम्ब भी बन सकता है। न्युक्लिअस के बाहर जो इलेक्ट्रॉन्स् है उनके वलयों को बदलने से भी अणु शक्ति निर्माण होती है। यदि न्युक्लिअस को तोड़ा गया या बदल दिया गया तो कितनी प्रचंड ऊर्जा निर्माण हो सकती है इसका अंदाजा आप इस घटना से कर सकते हैं – 1945 में जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर दो बम डाले गए थे जिसके कारण उन दो शहरों का पूरा विध्वंस होकर वहाँ करोड़ो लोगों की मौत हुई थी, मतलब एक छोटे से अणु में कितनी प्रचंड ऊर्जा होती है!

इसी तरह हमारे मानवीय देह के प्रत्येक अणु में ब्रह्मांडव्यापी तत्व भरे हुए है। वं. दादाजी द्वारा प.पू. बाबा ने हमें 5 दीक्षाऐं दी मतलब क्या किया है?तो हमारे मानवीय देह का जो बुनियादी तत्व है उसे बदलकर वहाँ विशेष तत्व का निर्माण किया है तथा हमारे देह के वलयों पर कार्य किया है यानी वलयों के स्थानों में बदल किया है। हमारा 'गुरुवलय' जो देह से दूर था उसे देह के पास लेकर आए। देहिक शक्ति और आत्मिक शक्ति पर ध्यान केंद्रित करके विमोचन द्वारा कुछ वलयों को कम किया जिसके फलस्वरूप अब वहाँ ज्यादा वलय नहीं रहे। यह करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है और वह ऊर्जा है 'गुरुशक्ति–गुरुतत्व' यानी वं. दादाजी ने हमें 'गुरुकृपाशीर्वाद' के जरिए दीक्षा देकर हमारे तत्व को पहले अविकसित अवस्था से विकसित अवस्था इस रूप में लाया। यह पहले साधना सम्मेलन में आपको बताया है।

शेष आगे अंक में –Continue ....

।। शुभं भवतु।।

जनम जनम का सेवक

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी। अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible